Vol. 5, Issue. 2 (July 2016) pp. 26-30 Sangeet Galaxy
ISSN: 2319-9695

भारतीय संगीत में 'भरत और नारद' : एक विश्लेषण

डॉ0 लावण्य कीर्ति सिंह 'काव्या'
संगीत एवं नाट्य विभाग
ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय,
दरभंगा
Email- lawanyaks@gmail.com

भारतीय संगीत में 'भरत' और 'नारद' दो महत्त्वपूर्ण विभूतियाँ है। इनका नाम विशेष रूप से उल्लेखनीय है। 'भरत' के सन्दर्भ में कई मत हैं। अमरकोश में 'भरत' को 'नट' का पर्यायवाची बताया गया है। भरत का व्यक्तित्व अद्यतन अनसुलझी पहेली के समान है। श्रीमद्भागवत में नट, नर्तक, सूत, मागध, बन्दी जन–ये साथ–साथ गिनाए गए हैं। भारतीय सांस्कृतिक इतिहास में 'भरत' नामक कई व्यक्तित्व विराजमान हैं। यथा – राजा दुष्यन्त का पुत्र 'भरत', श्रीरामचन्द्र के भ्राता 'भरत' आदि। प्राचीन तमिल साहित्य के अनुसार 'पंचभारतीय' नामक नाट्यग्रन्थ में पाँच भरतों का विधान है– वृद्ध भरत, भरत, कोहल भरत, दत्तिल भरत, तथा मतंग भरत।

'मत्स्य पुराण' में भी भरतमुनि का उल्लेख है। 'कुट्टिनीमत' के अनुसार भरत नामक नृत्याचार्य थे। बाणभट्ट ने भरतकृत 'गीतप्रणाली' तथा 'नृत्तशास्त्र' का उल्लेख किया है। प्रो. रामकृष्ण कवि ने भरत का विश्लेषण करते हुए 'आदिभरत' का तात्पर्य 'सदाशिवभरत' बताया है। परन्तु डॉ. गोडे ने 'आदिभरत' को नाट्यशास्त्र से अलग माना है। 'भरतों' से पृथकता के लिए 'नाट्यशास्त्र' का अभिज्ञान 'आदिभरत' है, ऐसा डॉ. गोडे ने कहा है। आन्ध्रलिपिबद्ध 'आदिभरत' नाट्यशास्त्र का ही प्रतिरूप है। 'भावप्रकाशन' में भरत को 'भरत' तथा 'वृद्धभरत' दो रूपों में नामित किया गया है। शारदातनय के अनुसार, भरतवृद्ध अथवा 'आदिभरत' की रचना गद्यमय है तथा 'भरत' की रचना श्लोकमय है। इनके अनुसार ही 'नाट्यवेद' से निःसृत सारग्रन्थ का जिसने निर्माण किया, वे 'नट' ही भरत हैं। 'नाट्यशास्त्र' में ही नट–कार्य के कर्त्ता को 'भरत' कहा गया है। (भरतकृत नाट्यशास्त्र, अध्याय 13, श्लोक 20; अध्याय 14, श्लोक 65; अध्याय 17, श्लोक 122; अध्याय 22, श्लोक 25; अध्याय 27, श्लोक 78; अध्याय 35, श्लोक 11; अध्याय 35, श्लोक 42; अध्याय 36, श्लोक 32; आदि।)

डॉ. मनमोहन घोष ने भरत के व्यक्तित्त्व की काल्पनिकता का विवेचन किया है। महाकवि कालिदास एवं बाणभट्ट द्वारा भरत का 'नाट्यशास्त्र' के आचार्य के रूप में उल्लेख हुआ है। 'नाट्यशास्त्र' के आधार पर यह भी सिद्ध करने की चेष्टा की गई है कि 'भरत' शब्द जातिवाचक था। 'शारदातनय' ने कहा है कि ब्रह्मा ने भरत एवं उनके पुत्रों से कहा – 'नाट्यवेद भरत' अर्थात् 'नाट्यवेद' का भरण करो और संसार में 'भरत' नाम से ख्याति अर्जित करो।

हेमचन्द्राचार्य ने भी 'अभिधानचिन्तामणि' में 'भरत' शब्द को 'नट' अर्थ में प्रयुक्त किया है। नाट्यशास्त्र में 'भरत' का बहुवचन प्रयोग भी हुआ है, यथा – भरताः, भरतानाम् आदि। स्पष्ट है कि यदि भरत व्यक्तिवाचक (नामार्थक) होता तो वह बहुवचन नहीं हो पाता, अतः बहुवचन प्रयोगों में 'भरत' जातिवाचक ही सिद्ध होता है। यथा– 'अतः परं प्रवक्ष्यामि भरतानां विकल्पनम्।' (नाट्यशास्त्र, बड़ौदा संस्करण, अध्याय 35, श्लोक 21)

नाट्यशास्त्र में भरत के सौ पुत्रों की संख्या कही गई है। भरत के शिष्यों को उनका 'मानस–पुत्र' कहा गया है – शाण्डिल्य, वात्स्य, कोहल, दत्तिल, जटिलांवष्टक, तण्डु, अग्निशिख, सैन्धव, सपुलोमान्, शाड्विल, विपुल, कपिंजलि, बादरि, यमधुम्रायण, जम्बुध्वज, काकजंघ, स्वर्णक, तापस, कैपारी, शालिकर्ण, दीर्घगात्र, शालिक, कौत्स, ताण्डायनि, पिंगल, चित्रक, बन्धुल, भल्लक, मुष्टिक, सैन्धवायन, तैत्तिल, भार्गव, शुचि, बहुल, अबुध बुधसेन, पाण्डुकर्ण, सुकेरल, ऋजक, मण्डक, शम्बर, वंजुल, मागध, सरल, कर्त्तारत, उग्र, तुषार, पार्षद, गौतम, बादरायण, विशाल, सबल, सुनाभ, मेष, कालिप, भ्रमर, पीष्मुख, नखकुट्ट, अश्मकुट्ट, षट्पद, उत्तम, पादुकोपान, श्रुति, चाषस्वर, अग्निकुंड, अज्यकुण्ड, वितण्डय, कर्त्तराक्ष, हिरण्याक्ष, कुशल, दुःसह, लाज, भयानक, बीभत्स, विचक्षण, पुण्ड्राक्ष, पुण्ड्रनाश, असित, सित, विद्युज्जिह्य, महाजिह, शालकायन, श्यामायन, माठर, लोहितांग, सवर्तक, पंचशिख, त्रिशिख, शिख, शंखवर्णमुख, षण्ड, शंकुकर्ण, शक्रनेमि, गमास्ति, अंशुमाली, शठ, विद्युत्, शातजंघ, रौद्र और वीर।

शारदातनय कृत नाट्यशास्त्रीय ग्रन्थ 'भाव प्रकाशन' में भरत के पाँच पुत्रों का ही उल्लेख है। भरत के पुत्रों को भी 'भरत' ही कहा है। ऐसा उपर्युक्त कथन से भी स्पष्ट होता है – कोहलभरत, दत्तिलभरत आदि।

भरत की शिष्ट–परम्परा में दत्तिल रचित 'दत्तिलम्', कोहल रचित 'कोहलीयम्' तथा विशाखिल रचित 'विशाखिलम्' प्राप्त होता है। इसी परम्परा में मतंग कृत 'वृहद्देशी' नामक वृहद् ग्रन्थ भी आता है। भरत का उल्लेख परवर्ती आचार्यों ने बहुताधिक किया है तथा उनके मतों को भी उद्धृत किया है। महाराणा कुम्भा ने तो अपने ग्रन्थ में उन्हें कई स्थानों पर 'भगवान' विशेषण का प्रयोग किया है।

भरत एक वंश भी था जिनका व्यवसाय नाट्य था, उसके वंशज भी 'भरत' कहलाए। इन सभी तथ्यों से यह भी उल्लेख मिलता है कि नाट्यशास्त्र किसी एक भरत की रचना न होकर कई भरतों की कृति है। कौरव और पाण्डव भरतवंशी थे। 'नाट्यशास्त्र' प्रणेता भरत को मुनि कहा गया है। अस्तु –

प्रणम्य शिरसा दैवो पितामहमहेश्वरी।
नाट्यशास्त्रं प्रवक्ष्यामि ब्रह्मणा यदुदाहृतम्।।

इस श्लोक द्वारा ब्रह्मा और महेश्वर को प्रणाम करते हुए भरतमुनि ने अपने ग्रन्थ 'नाट्यशास्त्र' का आरम्भ किया है। नाट्य शास्त्र में कुल छत्तीस अध्याय हैं। जिस संस्करण में सैंतीस अध्याय प्राप्त होते हैं उसमें 37वें अध्याय में राजा नहुष की कथा को स्थान दिया गया है। इसे 200 ई0 पू0 से 500 ई0 पू0

का माना गया है। मूलतः वह नाट्य का ग्रन्थ है परन्तु इसके 28, 29, 30, 31 एवं 32, 33, 34 वे अध्याय में संगीत–संबंधी तत्त्वों की विस्तृत व्याख्या है।

नारद

भारतीय संस्कृति में कई नारद हैं – एक सन्त (मुनि), एक गन्धर्व तो एक धार्मिक, सांस्कृतिक ग्रन्थों के रचयिता। एक मुनि नारद जिन्होंने सामगान, पुराण एवं संहिताओं की रचना की। एक गन्धर्व नारद जिन्होंने संगीत को पृथ्वी पर लाया। एक नारद जिन्होंने 'नारदीय शिक्षा' की रचना की। 'संगीत मकरन्द' के रचयिता एक नारद हुए और एक नारद ने 'पंचमसारसंहिता' तो एक नारद ने चत्वारिंशत् 'राग निरूपण' लिखा। 'राग सागर' के रचयिता भी नारद ही हैं। एक नारद का उल्लेख संवादवाहक के रूप में भी हुआ है।

भारतीय संस्कृति में नारद एक महत्वपूर्ण नाम है – उन्हें ब्रह्मा का पुत्र भी कहा गया है – "A Classical Dictionary of Mythology and religion" में लिखा है – "A Rishi to whom some hymns of the Rigveda are as cribed. He is one to the "prajapatis" and also one of the great "seven Rishis.' The various notices of him are somewhat inconsistent. The Rigveda describes him as of the "Kanva" family. Another authority states that he sprang from the forehead of Brahma, and the son of Kashyapa and one daughter of Daksha."

"In some respect, he bears the resemblance to orphans. He is the inventor of the Veena (Mahati) and was the chief of the Gandharvas or the heavenly musician. Gandharvas and Apsaras where in the profession of Gandharva music, dance and instrumental music. They were always adept in music. Gandharva is said to be divisions of the nine divisions of ancient India."

नारद को ब्रह्मा का पुत्र भी कहा गया है। एक ब्रह्मचारी, ब्रह्मा और सरस्वती का प्रथम शिष्य जिन्होंने सर्वप्रथम पृथ्वी पर संगीत विद्या को फैलाया, घूम–घूमकर संवाद फैलाने वाला, 'महती' वीणा का आविष्कारक, वीणा के साथ चित्रित एक सन्त के रूप में जाना गया है। अथर्ववेद में उन्हें ऐतिहासिक अथवा पौराणिक भविष्यद्रष्टा एवं सिद्ध पुरूष कहा गया है।

कालिकाकारण, कपिवक्त्र, पिशुना आदि नारद के ही अभिधान हैं। 'अथर्ववेद' में नारद पौराणिक सिद्ध पुरूष एवं भविष्यद्रष्टा हैं। 'मैत्रेयी संहिता' में एक गुरू हैं। 'ऐतरेय ब्राह्मण' में हरिश्चन्द्र के पुरोहित हैं। 'सामविधान ब्राह्मण' में वृहस्पति के शिष्य हैं तो 'छान्दोग्योपनिषद्' में उन्हें सनत कुमार के साथ संज्ञा दी गई है। (Narad Puran, A Critical Study, Nambiar, pp. 396)

वायु पुराण में नारद प्रजापति के पुत्र कहे गए है। विष्णुपुराण, वायुपुराण, भागवत पुराण, ब्रह्म पुराणादि में नारद मौनेय गन्धर्व हैं। उन्हें नैसर्गिक शिल्पकार भी कहा गया है। देव–गन्धर्वों के दो वर्ग हैं – 1. मौनेय 2. प्राधेय।

दक्ष मुनि की पुत्री एवं महर्षि कश्यप के वंशज मौनेय कहलाए जिनकी संख्या साठ है। नारद मौनेय गन्धर्व समूह के हैं –

'देव गन्धर्वा द्विविधा केचित् मौनेयाः,
केचित् प्राधेयाः कश्यप पत्न्या दक्ष सुतायां
मुनि नगकायां जाताः मौनेयाः षोडशाः.....।'
इत्येवं महाभारतादि पर्व पंचषष्टितामाध्याय उक्ताः यथा।
'भीम सेनौग्रसेनौ च सुपर्णो वरूणस्तथा।
गोपति धृतराष्ट्रश्च सुर्यवर्चाश्च सप्तमः।।
सत्यवागर्कपर्णश्च प्रयुतश्चाभि विश्रुतः।
भीमश्चित्ररथश्चैव विख्यातः सर्वविद्वशी।।
कलिः पंचदशस्तेषां नारदश्चैव षोडशः।
इत्येते देवगन्धर्वा मौनेयाः परिकीर्तिताः।। (वाचस्पत्यम्, पु0 – 25, 27–28)

भारतीय संगीत में नारद कृत 'नारदीय शिक्षा' वैदिक संगीत से सम्बद्ध है। गन्धर्व नारद वैदिक संगीत में पूर्णतः असम्बद्ध हैं। गन्धर्व लोग वैदिक संगीत का गायन नहीं कर सकते थे, ऐसा निम्न श्लोक से परिलक्षित होता है –

'तुम्बरूनारदवसिष्ठविश्वावस्वादयश्च गन्धर्वाः।
सामसु निमृंत करणं स्वरसौक्ष्यम्यात्तेऽपि हि न कुर्युः।। (नारदीय शिक्षा)

यह श्लोक यह भी सिद्ध करता है कि शिक्षा–ग्रन्थों से पूर्व गन्धर्व–संगीत प्रचलित था। सन्त नारद और गन्धर्व नारद दोनों ही अलग–अलग थे। पुराण, उपनिषद, तन्त्रादि ग्रन्थों में संगीत को 'गान्धर्व', 'गान्धर्व वेद' की संज्ञा दी गई हैं।

नाट्यशास्त्र के रचयिता भरत ने नारद के प्रति इस प्रकार कृतज्ञता ज्ञापित की है –

'गान्धर्वमेतत् कथितंमया हि यत्पूर्वमुक्तंत्विह नारदेना।।' (नाट्यशास्त्र, अध्याय 28)

स्पष्ट है कि यहाँ गन्धर्व नारद भरत से पूर्व हैं। दत्तिल, मतंग आदि ने भी नारद का उल्लेख किया है।

भरत के बाद दत्तिल ने भी नारद को सन्दर्भित किया है। 'वृहद्देशी' के रचयिता मतंग ने भी तीनों ग्रामों के सम्बन्ध में विचार करते समय नारद का उल्लेख किया है। "History of Classical Sanskrit Literature" के लेखक कृष्णामाचार्यार ने नारद को वीणा के साथ हिन्दू–सिद्ध–पुरूष के रूप में चित्रित किया है – वे ब्रह्मा के पुत्र हैं और सर्वप्रथम नारद को ही संगीत कला में दीक्षित अथवा पहल करने वाला बताया है। कृष्णामाचार्यार के अनुसार, नारद ने 'नारदोपनिषद्' (अनुपलब्ध ग्रन्थ) से ही संगीत–सम्बन्धी दृष्टिकोण ग्रहण किया जिसे 'नारदीय शिक्षा' में उन्होंने विकसित किया।

प्रज्ञानन्द के अनुसार, तुम्बरू, विश्वावसु आदि गन्धर्वों में से एक थे – नारद, जिन्होंने गान्धर्व संगीत की व्याख्या की। 'नारदीय शिक्षा' में वैदिक और लौकिक संगीत दोनों को ही वर्णित किया गया है। यह संगीत के दो कालों के बीच सेतु का कार्य करता है। गान्धर्व संगीत उतना ही प्राचीन है जितना वैदिक संगीत। मार्गी संगीत बाद में विकसित हुआ। प्रज्ञानन्द ने नारद नामक चार व्यक्तियों का उल्लेख किया है – 1. 'नारदीय शिक्षा' के लेखक नारद, 2. 'संगीत मकरन्द' के रचयिता नारद 3. 'पंचमसारसंहिता' के लेखक नारद एवं 4. 'चत्वारिंशत्रागनिरूपणम्' के रचयिता नारद। इसके अतिरिक्त नारद प्रणीत पांच अन्य ग्रन्थ भी मिलते हैं – 1. नारद पुराण, 2. नारद समृति, 3. नारद पंच रत्न, 4. नारदोपनिषद् एवं 5. नारद भक्ति सूत्र।

सुरेश चन्द्र बनर्जी ने 'नारद' नामक कई विशिष्ट विद्वानों के सन्दर्भ में लिखा है –

"Narada and authoritative writer on smriti, who is supposed to have flourished between 100-300 A.D.…" "To a Narada is ascribed also the work on music called" "Sangita Makaranda", "Naradiya Shiksha", "Panchamsarasamhita" and "Raga Nirupana" (A Companion to Sanskrit Literature, P. 75).

इस सन्दर्भ में यह ज्ञात होता है कि सम्भवतया कोई सम्प्रदाय (नारदीय) रहा होगा और इस सम्प्रदाय के सभी ग्रन्थकारों ने 'नारद' नामक गोत्र को स्वीकार कर लिया हो और, विभिन्न काल–खण्डों में नारद नाम से विभिन्न ग्रन्थ रचे गए और इस सम्प्रदाय की शिक्षा ही 'नारदीय शिक्षा' कहलायी।

वैदिक–काल से पुराण–काल तक 'नारद' नामक अनेक विद्वानों का उल्लेख मिलता है। एक ही नाम के अनेक व्यक्तियों का आभास होता है। गान्धर्व ग्रन्थों में आदि–प्रचारकों के नारद का विशिष्ट एवं अग्रणी स्थान है। ब्रह्मा के समक्ष प्रथम नाट्य–प्रयोग में नारद का उल्लेख संगीत के लिए हुआ है। नाट्यशाला में भी नारद का उल्लेख कई स्थानों पर हुआ है। दत्तिल के अनुसार, पृथ्वी पर संगीत के प्रचारक नारद ही हैं। भरत काल तक नारद गन्धर्वों में स्थान बना चुके थे। नाट्यशाला निर्मिति के समय नारद की विशेष अर्चना की जाती थी। 'नारदीय शिक्षा' से स्पष्ट होता है कि गान्धर्व विषयक विवेचन नारद के मतानुसार हुआ है। आरम्भिक शतियों में (रामायण–महाभारत काल तक) नारद की प्रतिष्ठा संगीत–प्रर्वतक के रूप में स्थापित हो चुकी थी। रामायण, महाभारत, हरिवंशपुराण आदि में नारद गान्धर्व विशेषज्ञ के रूप में द्रष्टव्य हैं। प्राचीन संस्कृत एवं तमिल ग्रन्थों में नारद की वीणा (महती) का उल्लेख है।

सम्पूर्ण वैदिक वाड्मय में गन्धर्व के रूप में नारद का उल्लेख नही मिलता। ऋग्वेद की मात्र तीन ऋचाओं के निर्माता के रूप में नारद का वर्णन हैं। यजुर्वेद की मैत्रायिणीय संहिता में नारद का उल्लेख एकमात्र स्थान पर हुआ है जो गन्धर्व से सम्बद्ध नहीं है। अथर्ववेद संहिता में नारद का उल्लेख आवश्य है। परन्तु वहाँ भी गान्धर्व विषयक नारद नहीं है।

मन्त्रद्रष्टा नारद एवं गन्धर्व नारद दो भिन्न व्यक्ति हैं। सामवेद के छान्दोग्य में नारद का उल्लेख एक जिज्ञासु व्यक्ति के रूप में हुआ है।